9.अन्य विभागों के प्रशिक्षण में भागीदारी– कृषि विभाग, बीज प्रमाणीकरण, इफको, मत्स्य विभाग, उद्यान विभाग एवं सहकारिता विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान दिये।

10.वैज्ञानिक सलहाकार समिति बैठक– कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ की खरीफ में 30.06.07 एवं रबी में 07.09.07 को वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई जिनमें क्रमशः 62 एवं 71 सदस्यों ने हिस्सा लिया। मान्नीय सदस्यों के प्रमुख सुझावों को 2008–09 की कार्य योजना में समावेश किया गया है।

11.बीज ग्राम योजना–

सोयाबीन– किस्म जेएस 93–05 का आधार बीज 150 कृषकों को दिया गया। कृषकों की औसत उपज 1779.69 कि.ग्रा./हे0 रही । कुल 537.16 क्विं. शुद्ध बीज का उत्पादन हुआ। सोयाबीन बीज के शुद्ध बीज उत्पादन तकनीकी पर विभिन्न अवस्थाओं पर 3 प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिनमें 208 कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।

गेहूँ – किस्म जीडब्ल्यू 273 का आधार बीज 100 कृषकों को दिया गया जिनकी औसत उपज 3457.20 कि.ग्रा./हे0 रही तथा कुल 691.44 क्विं. शुद्ध बीज उत्पादित हुआ। बीज उत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं पर 3 प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिनमें 223 कृषक प्रशिक्षित किये गये।

12.मध्य प्रदेश बाटर सेक्टर रिस्ट्रक्चरिंग प्रोजेक्ट– इस परियोजना के अन्तर्गत नहर सिंचाई क्षेत्र के सिंचाई पंचायत के सदस्यों के लिए गेहूँ, चना, सरसों, मिर्च, आलू, पपीता, जैविक खेती एवं मृदा व जल प्रबंधन पर 4 प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिनमें 283 सदस्यों ने भाग लिया।

13.पौध वितरण– पपीता (पूसा नन्हा) के 7000 पौधे, टमाटर (जेटी–99) 3000, मिर्च (जेएम–283) 3000 और बैंगन (जेबी–15) 3000 पौधों का वितरण किया गया।

नोबल प्रिंटर्स, कटरा बाजार, टीकमगढ़–9993268032

2007-08

परिचय एवं उपलब्धियाँ

संरक्षक–
डॉ. आर. के. पाठक
अधिष्ठाता– कृषि महाविद्यालय
टीकमगढ़ म.प्र.

लेखन, संकलन एवं सम्पादन–
डॉ. आर.के.एस. तौमर
डॉ.बी.एल. साहू एवं
डॉ. रूपेन्द्र कुमार सिंह

प्रकाशक–
ज. ने.कृषि वि. विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ म.प्र.
फोन : 07683-244934 कार्या.
07683-245034 फैक्स

भाकृअनुप
ICAR

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)

॥ संदेश ॥

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ ''परिचय एवं उपलब्धियाँ 2007–08'' प्रकाशित कर रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि तकनीक का अद्यतन रूप में कृषकों के खेत तक सुलभ कराये जाने के लिए सशक्त माध्यम है। पिछले तीन–चार वर्षों से जिला सूखे की मार झेल रहा है। यह विषम परिस्थिति वैज्ञानिकों के लिये एक चुनौतिपूर्ण स्थिति थी फिर भी कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ ने वर्ष 2007–08 में शत–प्रतिशत उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। कार्यरत वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अथक प्रयास प्रशंसनीय हैं। मैं उन्हें हार्दिक शुभकामनाऐं देता हूँ।

डॉ. आर.के.पाठक
अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय
टीकमगढ़ (म.प्र.)

॥ आभार ॥

हम कृतज्ञ हैं मान्नीय डॉ. गौतम कल्लू जी, कुलपति, डॉ. जे.एस. रघु, संचालक विस्तार सेवाऐं, डॉ. व्ही.एस. तोमर, संचालक अनुसंधान सेवाऐं, जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जलबपुर, डॉ. यू.एस. गौतम, आंचलिक समन्वयक, आंचलिक समन्वयक एकांश, तकनीकी अन्तरण परियोजना, अंचल–7 जलबपुर, जिनकी गहन समीक्षा एवं सामयिक सुझावों के फलस्वरूप कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सका है।

डॉ. आर.के. पाठक, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़ के भी आभारी हैं। जिनका हमें समय–समय पर मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता रहा है। मैं डॉ. एम. पी. गुप्ता, डॉ. पी.सिकरवार एवं डॉ. योगरंजन का समय–समय पर दिये गये सहयोग के लिये अभार व्यक्त करता हूं।

डॉ. आर.के.एस. तोमर
कार्यक्रम समन्वयक

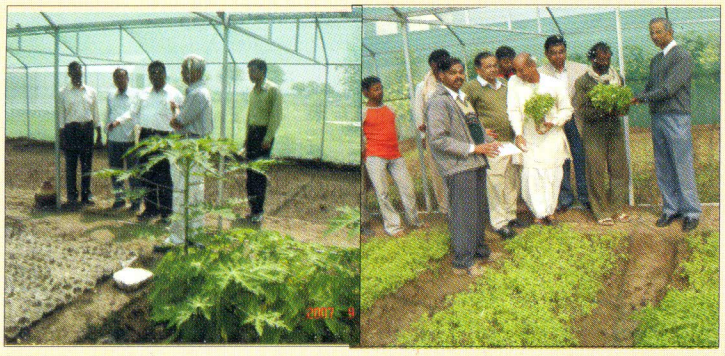

माननीय कुलपति डॉ. जी कल्लू जी एवं डॉ. व्ही.एस.तौमर संचालक अनुसंधान कृषि विज्ञान केन्द्र के भ्रमण पर

टीकमगढ़ जिला एक दृष्टि में

मध्यप्रदेश का टीकमगढ़ जिला ज्वार–गेहूं सम्भाग के बुन्देलखण्ड कृषि जलवायु परिक्षेत्र के अन्तर्गत समुद्र तल में 426.70 मी. ऊँचाई पर स्थित है। भौगोलिक रूप से 24° 26' 10'' से 25° 33' 15'' उत्तरी अक्षांश तथा 78° 25'15'' से 79° 20'25'' पूर्वी देशान्तर तक फेले इस जिले का क्षेत्रफल 5048 वर्ग कि.मी. है।

ग्रामों की संख्या 1003, 459 ग्राम पंचायतें, छैः तहसीलें एवं विकासखण्ड हैं जिले की कुल जनसंख्या 1202998 है। पुरूष महिला अनुपात 1000:886 है। सामान्य रूप से साक्षारता 55.73 प्रतिशत है। जिले की 75 प्रतिशत जनसंख्या के जीवन यापन का आधार कृषि है। भौगोलिक दृष्टि से जिला 504002 हे0 में फैला हुआ है, जिसमें से 240951 हे0 शुद्ध क्षेत्रफल बोया जाता है। जिले में कृषकों की संख्या 173134 है जिसमें 44.81, 28.17, 19.34, 7.14 एवं 0.51 प्रतिशत क्रमशः सीमान्त, लघु, अर्धमध्यम, मध्यम एवं बड़े कृषक हैं। जिले का मौसम गर्म तथा अर्ध शुष्क प्रकार का है।जिले में दक्षिण–पश्चिम मानसून द्वारा वर्षा होती है। मानसून जून के अन्त से प्रारंभ होकर सितम्बर माह के मध्य तक समाप्त हो जाता है। शीतकालीन वर्षा की संभावना बहुत ही कम रहती है। जिले की वर्षा का औसत 1001.10 मि.मी. है। विगत 5 वर्षों से औसत से कम वर्षा दर्ज की जा रही है। जिले का कुल सिंचित क्षेत्रफल 162976 हे0 है जो कि शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल का 67.63 प्रतिशत है। सस्य सघनता 154.10 प्रतिशत है।

जिले में उर्वरक खपत खरीफ एवं रबी में क्रमशः 10.64 व 86.70 कि.ग्रा. प्रति हे0 है। बीज बदलाव दर खरीफ में 3.43 प्रतिशत तथा रबी में 5.18 प्रतिशत है। 191.42 हजार हे0 में खरीफ एवं 179.21 हजार हे0 में रबी की फसलें ली जाती हैं। खरीफ में धान, ज्वार, मक्का, उर्द, मूंग, मूंगफली, तिल, सोयाबीन तथा रबी में गेहूँ, जौ, चना, मटर, मसूर, सरसों आदि प्रमुख फसलें ली जाती हैं। आम, नीबू, पपीता, अमरूद, प्रमुख फलदार फसलें हैं। आलू, टमाटर, बेंगन, प्याज, प्रमुख सब्जी वाली फसलें तथा मसाला फसलों में अदरक, मिर्च, हल्दी, तथा धनिया प्रमुखता से उगाई जाती हैं। जिले में पशुधन की संख्या 10.07 लाख है जिसमें 4.90 लाख गौवंशीय, भैसवंशीय 1.81 लाख, भेड़ 0.44 लाख, बकरी 2.62 लाख एवं मुर्गी 1.27 लाख हैं। दुधारू गायों की संख्या 77.18 हजार तथा भैंसों की संख्या 63.41 हजार है। जिले में 789 तालाबों के कुल 6952 हे0 क्षेत्र में मछली पालन किया जाता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र का परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र परियोजना कृषि की उन्नत तकनीकी कृषकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के द्वारा सन् 1974 में शुरू की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य कृषि के नवीनतम तकनीकी ज्ञान को कार्य अनुभव के माध्यम से ''देखकर सीखना एवं करके सीखना'' सिद्धान्त के आधार पर कृषकों तक पहुंचाना है, टीकमगढ़ कृषि विज्ञान की स्थापना अक्टूबर 1994 में की गई थी तभी से कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि विकास की दिशा में अग्रसर है। केन्द्र द्वारा कृषि विकास कार्यक्रम शुरू करने के पहले गांव का विस्तृत सर्वेक्षण किया जाता है तथा सर्वेक्षण के आधार पर सम्पूर्ण ग्रामीण विकास को लक्ष्य मानकर ''प्राद्योगिकी हस्तांतरण'' कार्यक्रम को नियोजित रूप में, समयबद्ध कार्ययोजना तैयार की जाकर उसको कार्य रूप दिया जाता है।

गतिविधियाँ

(1) कृषि प्रक्षेत्र अनुसंधान
(2) सेवाकालीन प्रशिक्षण
(3) कृषकों/कृषकों महिलाओं और ग्रामीण युवाओं के लिये व्यवसायिक प्रशिक्षण
(4)अग्रणी प्रदर्शन

उद्देश्य :-

- क्षेत्र विशेष के अनुकूल टिकाऊ भूमि उपयोग प्रणालियों के विकास सुधार और दस्तावेजीकरण हेतु 'प्रक्षेत्र परीक्षण' के आधार पर राज्यकृषि विश्वविद्यालयों / क्षेत्रीय अनुसंधानों केन्द्रों के विषय-विशेषज्ञों, राष्ट्रीय कृषि प्रसार कार्यक्रमों और विस्तार कार्यकर्ताओं से सहयोग करना।
- निर्धारित कार्यक्षेत्र में विस्तार कार्यकर्ताओं को उभरती कृषि अनुसंधान तकनीकों की अद्यतन जानकारी देने के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन।
- ''करके सीखो'' पर जोर देते हुये ग्रामीण युवाओं के लिये कृषि और अन्य संबंधित व्यवसायों में लम्बी अवधि के व्यवसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन ताकि स्वरोजगार और संस्थागत वित्त की व्यवस्था हो सके।
- विभिन्न फसलों के उत्पादन आंकड़ों और 'फीडबैक' सूचना प्राप्ति के लिये अग्रणी प्रदर्शनों का आयोजन।

उपलब्धियाँ 2007-08

(1) प्रशिक्षण कार्यक्रम

(अ) अभ्यासरत कृषक/कृषक महिलाओं के लिये- फसल उत्पादन उद्यानिकी, पौध संरक्षण, पशुपालन, मृदा विज्ञान एवं भूमि एवं जल प्रबंधन पर अभ्यासरत् कृषक व कृषक महिलाओं हेतु कुल 120 प्रशिक्षण आयोजित किये गये जिसमें कुल 3504 कृषकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया इन प्रशिक्षणों में कुल कृषकों में से 26 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं अ.ज.जा. के कृषकों की भागीदारी रही।

(ब) ग्रामीण युवाओं के लिये- ग्रामीण युवाओं हेतु कुल 13 प्रशिक्षण आयोजित हुए जिसमें 334 युवाओं को प्रशिक्षण दिया गया। जिनमें 44.3 प्रतिशत युवा महिलाओं की भागीदारी रही, प्रशिक्षण प्रमुख रूप से मछली पालन, बकरी पालन, मुर्गीपालन, मसरूम, मधुमक्खी पालन पर आयोजित किये गये।

(स) अंतः सेवाकालीन प्रशिक्षण- कुल 10 प्रशिक्षण कार्यक्रमों में 379 ग्रामीण स्तर के अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया।

(द) महिला सशक्तिकरण- महिलाओं के सशक्तिकरण, कार्यक्षमता, दक्षता बढ़ाना एवं उनकी दैनिक आय बढ़ाने हेतु कार्यक्रम चलाये गये। महिलाओं के लिये 27 प्रशिक्षणों में 558 महिलाओं ने भाग लिया। उन्नत कृषि यंत्रों का उपयोग, पशुओं का रखरखाव, अनाज भण्डारन, बीज संसाधन, फल, सब्जी परिरक्षण, बड़ी, पापड, चिप्स, अचार, मुरब्बा, अदरक एवं बेर का शरबत बनाने पर प्रशिक्षण दिया गया।

(2) अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन-

इसका प्रमुख उद्देश्य दलहन, तिलहन और अन्य फसलों की नवीनतम विकसित तकनीकों की उत्पादन क्षमता किसानों के खेतों पर प्रदर्शित करना और उत्पादन बढ़ाने वाले कारकों का अध्ययन करना साथ ही फीडबैक सूचना प्राप्त करना है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्न फसलों पर प्रदर्शन आयोजित किये गये।

(अ)तिलहन फसलें

(1)सोयाबीन- प्रचलित पद्धति छिटकवां विधि से बोनी, असंतुलित उर्वरक (9:23:0 ना.फा.पो.कि.ग्रा. /हे0) खरपतवार एवं कीट नियंत्रण हेतु रासायनिक दवाओं का अनियमित उपयोग से उपज में लगभग 52 प्रतिशत तक की कमी आंकी गई है। सोयाबीन की किस्म जेएस 93-05 के साथ कतार में बोनी, इमेजाइथाईपर (100 मि.ली./ हे0) का बोने के 15-20 दिन पश्चात छिड़काव, 20:60:20 ना.फा.को. कि. ग्रा./ हे0 + राइजोवियम+ पीएसबी 20 ग्रा./कि.ग्रा. बीज एवं गहरी जुताई+खूँटी गाड़ना (50/ हे0) + ट्राइजोफास (1000 मि.ली./ हे0) आदि तकनीकों का 12 कृषक प्रक्षेत्रों पर 5 है. से प्रदर्शन आयोजित किये गये।

परिणाम- प्रदर्शन भूखण्ड से 13.29 क्विं./ हे0 उपज प्राप्त की गई, जो कि प्रचलित किसान पद्धति (6.79 क्विं./ हे0) की अपेक्षा 95.72 प्रतिशत अधिक पायी गई। स्थानीय पद्धति की तुलना में प्रदर्शन प्रखण्ड से रू. 8300/ हे0 अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

(2) सरसों- यह गैर परम्पारिक फसल है। पुरानी किस्म, असंतुलित खाद एवं उर्वरक (40:20:00 ना.फा. पो.,कि.ग्रा./ हे0) एवं माहू नियंत्रण के लिये रसायनिक दवाओं का अनियमित उपयोग के कारण उपज में लगभग 65 प्रतिशत तक की कमी आती है। इस समस्या से लगभग 20 हजार हे0 क्षेत्रफल प्रभावित है। इन सभी समस्याओं के निदान हेतु सरसों की नवीनतम किस्म पूसा जय किसान के साथ 80:40:20:30 ना. फा.पो.,स. कि.ग्रा./हे0 +एजेटोवेक्टर+पी.एस.बी. 20 ग्रा./प्रति कि.ग्रा. बीज+ इमेडाक्लोरोप्रिड 5 मि.ली./15 ली. पानी आदि तकनीकी का प्रदर्शन 12 कृषकों के यहाँ कुल 5 हे0 में किया गया।

परिणाम- प्रदर्शन भूखण्डों की औसत उपज 17.000 क्वि./हे0 थी, जो कि स्थानीय पद्धति (9.66 क्विं./हे0) की तुलना में 88 प्रतिशत अधिक थी तथा रू. 15375/हे0 अतिरिक्त लाभ प्राप्त हुआ।

(ब)दलहनी फसलें:-

(1) उर्द- उर्द की खेती जिले में 64 हजार हेक्टेयर में होती है। कृषक स्थानीय किस्मों की बीज की बोनी करते हैं जो कि पीले वायरस रोग के प्रति ग्राही होती है इस कारण उपज में लगभग 35 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। इस समस्या से जिले का 30000 हे0 क्षेत्रफल प्रभावित है।

परिणाम- इस फसल के 12 किसानों के यहां 5 हे0 क्षेत्रफल में प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। प्रदर्शन से 7.99 क्वि./हे0 उपज प्राप्त